Toppersnotes®
Unleash the topper in you

1st ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 4

शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र एवं शैक्षिक प्रबंधन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	शिक्षण	1
2	बाल विकास के आयाम	3
3	बालक का मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याए	17
4	सांवेगिक बुद्धि	24
5	सामाजिक निर्माण के रूप मे लिंग और इसकी भूमिका	27
6	शैक्षिक प्रबंधन की अवधारणा व कार्य	31
7	शैक्षिक निरीक्षण	43
8	शैक्षिक पर्यवेक्षण	45
9	नेतृत्व की शैलियाँ	48
10	राज शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर	51
11	राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड – अजमेर	53
12	उच्च अध्ययन शिक्षा संसथान	54
13	स्टेट इनिशिएटिव फोर क्वालिटी एजूकेशन	55
14	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संसथान	60
15	राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल	61
16	राष्ट्रिय माध्यमिक शिक्षा अभियान	62
17	समग्र शिक्षा अभियान	65
18	राज. शिक्षा पहल	66
19	राजस्थान निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार	67
20	राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में निशुल्क प्रवेश	71
21	राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार	72
22	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	82
23	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	95

1 CHAPTER शिक्षण

- अध्यापक और विधार्थी के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया शिक्षण क्रिया कहलाती है।
- शिक्षण को जॉन ड्यूबी ने त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है।

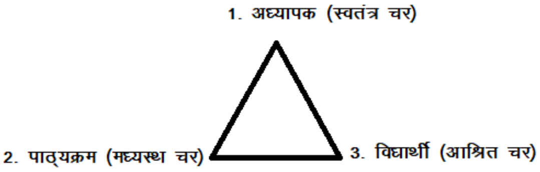

- एडम्स ने शिक्षण को द्वीध्रुवीय प्रक्रिया माना है।
  1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)
  2. विधार्थी (आश्रित चर)

  एडम्स के अनुसार शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर अर्थात् एक दूसरे के विकास में परिवर्तन के लिए कार्य करता है।

परिभाषाएँ

B.O स्मीथ के अनुसार शिक्षण क्रियाओं की एक ऐसी विधि है जो सीखने की उत्सुकता जागृत करती है।
वर्ट के अनुसार शिक्षण अधिगत हेतु प्रेरणा पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन है।
थाइन के अनुसार अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।

शिक्षण की विशेषताएँ

1. शिक्षण एक अन्तः क्रिया है।
2. शिक्षण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. शिक्षण एक सौदशम प्रक्रिया है।
4. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है।
5. शिक्षण आमने–सामने होने वाली प्रक्रिया है।
6. शिक्षण एक उपचार विधि है।
7. शिक्षण का मापन किया जा सकता है।
8. शिक्षण एक तार्किक क्रिया है।
9. शिक्षण पथ प्रदर्शन है।
10. शिक्षण निर्देशन की प्रक्रिया है।
11. शिक्षण एक औपचारिक व अनौपचारिक प्रक्रिया है।
12. शिक्षण का कार्य ज्ञान में विकास करना है।
13. शिक्षण वातावरण में समायोजित होने की योग्यता विकसित करता है।
14. शिक्षण एक कौशलपूर्ण प्रक्रिया है।
15. शिक्षण छात्र तथा अध्यापक के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है।

शिक्षण के सूत्र

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. विशिष्ट से सामान्य की ओर
4. पूर्ण से अंश की ओर
5. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
6. आगमन से निगमन की ओर
7. मूर्त से अमूर्त की ओर

शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण

डॉ. बी.एस. ब्लूम के अनुसार शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण–

1. ज्ञाननात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तक सन् 1956 में डॉ. बी. एस. ब्लूम ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे के कक्षा–कक्ष शिक्षण से होता है
- इसके पद निम्नलिखित है –

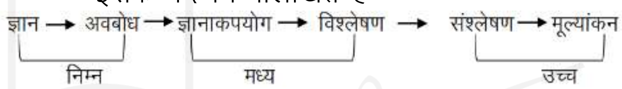

- शैक्षिक क्षेत्रीय महाविद्यालय – R.C.E
  इनकी स्थापना सन् 1963 में की गई
  1. भोपाल
  2. भुवनेश्वर
  3. शिलॉग
  4. अजमेर
  5. मैसूर
- TIE – Trhionsl Institute of Education
- RCEM ने ब्लूम के ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्यों में संशोधन किया।
- इन्होंने विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन के स्थान पर सृजनात्मकता शद्ध को रखा।
- इन्होनें ने बताया कि जो अर्थ विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन का होता है वहीं अर्थ सृजनात्मकता का होता है।

2. भावात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन 1964 में करथवाल ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की रुचि एवं भावना से होता है।

  प्रश्न – अनुक्रिया निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है।

  (A) ज्ञानात्मक (B) भावात्मक
  (C) क्रियात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

1. आग्रहण
2. अनुक्रिया — निम्न स्तरीय
3. अनुमूल्यन
4. प्रत्यभीकरण / प्रत्यक्षीकरण — मध्य स्तरीय
5. व्यवस्थापन
6. गत्यात्मकचरित्र निर्माण — उच्च स्तरीय

3. क्रियात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन सन् 1969 सिंपसन ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं से होता है। पद निम्न है –
  1. उद्दीपन
  2. कार्य करना
  3. नियंत्रण
  4. समायोजन
  5. सम्भावीकरण
  6. आदत निर्माण

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

प्रश्न – उदाहरण देना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?
(A) ज्ञानात्मक (B) भावात्मक
(C) क्रियात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न – प्रयोग करना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?
(A) ज्ञानात्मक (B) अवबोध
(C) ज्ञानोपयोग (D) कौशल

प्रश्न – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?
(A) अवबोध (B) कौशल
(C) अभिरूचि (D) अभिवृति

प्रश्न – गलती का पता लगाकर उसमें संशोधन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?
(A) ज्ञानात्मक (B) ज्ञानोपयोग
(C) कौशल (D) अभिरूचि

प्रश्न – पहचान निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है?
(A) ज्ञान (B) अवबोध
(C) ज्ञानोपयोग (D) कौशल

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

1. **ज्ञान** – पहचान, तथ्य, अव्यय, नियम, सूत्र, चिन्ह / प्रतीक परिभाषा, सिद्धान्त, क्रियाविधि।
2. **अवबोध** – उदाहरण देना, अपने शब्दों में बताना / व्याख्या करना, वर्गीकरण करना, विश्लेषण, संश्लेषण, सूची बनाना, गलती का पता लगाना।
3. **ज्ञानोपयोग** – प्राप्त ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेना, विधि का चयन करना, गलती में संशोधन करना।
4. **कौशल** – चित्र बनाना, मॉडल बनाना, मानचित्र पढ़ना, ग्लोब बनाना एवं पढ़ना, ग्राफ पढ़ना, सुन्दर शीघ्र शुद्ध लिखना, चार्ट बनाना सारणी बनाना।
5. **अभिरूचि** – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना, कमजोर विद्यार्थियों की सहायता करना, जीवनियाँ पढ़ना, साहित्य पढ़ना, उपन्यास पढ़ना।
6. **अभिवृति** – सकारात्म (भाषा), आशावादी (SS), धनात्मक (गणित), वैज्ञानिक (विज्ञान)

वह मूल्यांकन जो किसी व्यक्ति के ज्ञान और कौशल की तुलना किसी विशेष समूह के ज्ञान और कौशल से करता है अनुदेशित मूल्यांकन कहलाता है।

- शिक्षण का त्रिसूत्र – मुदालियर आयोग (मा.शि.बोर्ड) ने 1952–1953 में दिया।
- 4H सूत्र – गाँधीजी ने दिया (Health, Hand, Head, Heart)।

2 CHAPTER बाल विकास के आयाम

शारीरिक विकास

शारीरिक विकास का अभिप्राय शरीर के समस्त आंतरिक एवं बाह्य अंगों के क्रमिक एवं संतुलित विकास से है। इसमें लम्बाई, भार, शारीरिक अनुपात, हड्डियाँ, माँसपेशियाँ, आंतरिक अंग, शारीरिक स्वास्थ्य एवं क्रियाशीलता का समावेश होता है। यह विकास जन्म से पूर्व प्रारंभ होकर किशोरावस्था के अंत तक विभिन्न चरणों में होता है। शारीरिक विकास के अंतर्गत यह भी विश्लेषित किया जाता हैं कि वे कौन - कौन से तत्व हैं जो शारीरिक विकास को प्रभावित करते हैं ।

शारीरिक विकास के नियम

- **मस्तकाधोमुखी विकास का नियम (Cephalocaudal Law)** : यह नियम बताता है कि शारीरिक विकास की दिशा सिर से नीचे की ओर होती है। अतः पहले मस्तिष्क, फिर धड़, फिर हाथ और अंततः पैरों का विकास होता है।
- **विकास चक्र का नियम (Law of Cyclic Development) :** मानव विकास लयात्मक होता है, यह निरंतर एक समान नहीं होता। यह निम्नलिखित चार चक्रों में विभाजित है:-

चक्र	**आयु सीमा**	**विशेषता**
प्रथम चक्र	जन्म से 2 वर्ष	तीव्रतम विकास
द्वितीय चक्र	2 से 11 वर्ष	विकास धीमा
तृतीय चक्र	11 से 15 वर्ष	पुनः तीव्र विकास
चतुर्थ चक्र	15 से 18 वर्ष	विकास में मंदता

शारीरिक विकास की विशेषताएँ :

- **शारीरिक रचना का विकास :** इसमें शरीर की आकृति, लम्बाई, भार, हड्डियों, दाँतों आदि का विकास सम्मिलित होता है।
- **शारीरिक क्रिया विकास :** तंत्रिका तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, संचार तंत्र, अंतःस्रावी ग्रंथियाँ आदि का समुचित विकास।

विकास की अवस्थाओं में शारीरिक विकास :

- **शैशवावस्था (Infancy)** (जन्म से 6 वर्ष तक) : शैशवावस्था में शारीरिक विकास अत्यन्त तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में बालक का शरीर आकार, वजन, लंबाई, हड्डियों, माँसपेशियों और आंतरिक अंगों के स्तर पर तीव्रता से विकसित होता है।
  - ✓ **भार**: जन्म के समय बालकों का औसत वजन लगभग 7.15 पौंड और बालिकाओं का 7.13 पौंड होता है। जन्म के छह माह में शिशु का वजन दुगुना और एक वर्ष के अंत तक तिगुना हो जाता है, जो दर्शाता है कि इस अवस्था में शरीर की वृद्धि अत्यंत तीव्र होती है।
  - ✓ **लंबाई**: जन्म पर शिशु की औसत लंबाई लगभग 50 सेमी. होती है, जो एक वर्ष की आयु में 67–70 सेमी. हो जाती है। दो वर्ष तक यह बढ़कर लगभग 77–82 सेमी. तथा छह वर्ष तक 100–110 सेमी. तक पहुँच जाती है।
  - ✓ **सिर और मस्तिष्क**: जन्म के समय शिशु का सिर उसके शरीर की कुल लंबाई का एक चौथाई होता है। पहले दो वर्षों में सिर का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है और मस्तिष्क का वजन शरीर के कुल वजन की तुलना में अधिक होता है।

- ✓ **हड्डियाँ**: नवजात शिशु में लगभग 300 हड्डियाँ होती हैं जो कोमल और लचीली होती हैं। जैसे-जैसे शिशु का विकास होता है, ये हड्डियाँ कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि खनिज लवणों के कारण मजबूत होती जाती हैं।
- ✓ **माँसपेशियाँ**: इस अवस्था में शिशु की माँसपेशियाँ उसके कुल शरीर भार का लगभग 23% होती हैं। पहले दो वर्षों में माँसपेशियों का विकास तीव्र होता है और इस आयु तक भुजाएँ दुगुनी तथा टाँगें डेढ़ गुनी लंबाई तक विकसित हो जाती हैं।
- ✓ **अन्य अंग**: छठे महीने से शिशु के दूध के दाँत निकलने शुरू हो जाते हैं, और एक वर्ष की आयु तक आठ दाँत हो जाते हैं। लगभग चार वर्ष की आयु तक सभी दूध के दाँत निकल आते हैं। इसके अतिरिक्त हृदय, फेफड़े, स्नायु तंत्र और पाचन तंत्र आदि का भी तीव्र विकास होता है।

➢ **बाल्यावस्था (Childhood) — 6 से 12 वर्ष तक :** बाल्यावस्था को शारीरिक विकास की स्थिरता एवं प्रशिक्षण की अवस्था माना जाता है। इस काल में शरीर का विकास धीमी गति से, लेकिन नियमित रूप से होता है।

- ✓ **भार**: इस अवस्था में बालकों का भार नियमित रूप से बढ़ता है। लगभग 9–10 वर्ष की आयु तक बालकों का वजन बालिकाओं की तुलना में अधिक होता है, किन्तु इसके बाद बालिकाओं का भार बालकों से अधिक हो जाता है।
- ✓ **लंबाई**: बाल्यावस्था में लंबाई की वृद्धि प्रतिवर्ष लगभग 2–3 इंच की दर से होती है। यह वृद्धि शैशवावस्था की तुलना में धीमी होती है।
- ✓ **हड्डियाँ**: इस काल की प्रारंभिक 4–5 वर्षों में हड्डियों की संख्या में वृद्धि होती है और 10–12 वर्ष की आयु तक हड्डियाँ कठोर तथा मजबूत हो जाती हैं, जिससे शरीर की स्थिरता बढ़ती है।
- ✓ **दाँत**: बाल्यावस्था की शुरुआत में दूध के दाँत गिरने लगते हैं और उनके स्थान पर स्थायी दाँत निकलते हैं। 12–13 वर्ष की अवस्था तक लगभग सभी स्थायी दाँत आ जाते हैं।
- ✓ **मस्तिष्क**: इस अवस्था में मस्तिष्क लगभग पूर्णतः विकसित हो जाता है। बालक इस आयु में अपने शारीरिक गतिविधियों पर नियंत्रण पाना सीखते हैं।
- ✓ **शारीरिक अंग**: बालक के शरीर के अधिकांश अंग इस अवस्था में कार्यात्मक नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं, जिससे उसकी गति, समन्वय और संतुलन क्षमता में सुधार आता है।

➢ **किशोरावस्था (Adolescence) — 13 से 21 वर्ष तक** : किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता की अवस्था होती है। इस काल में शरीर तीव्रता से बढ़ता है और बालक या बालिका व्यस्कता की ओर बढ़ता है।

- ✓ **लंबाई में वृद्धि**: किशोरावस्था के आरंभ में लड़कियाँ लड़कों से अधिक लंबी हो जाती हैं, किन्तु 14 वर्ष के बाद लड़के अधिक लम्बाई प्राप्त करते हैं। यह वृद्धि पिट्यूटरी ग्रंथि के स्राव से नियंत्रित होती है।
- ✓ **भार में वृद्धि**: इस अवस्था में वजन में तीव्र वृद्धि होती है। 11 से 14 वर्ष की आयु तक बालिकाएँ अधिक भारी होती हैं, जबकि 15 वर्ष के बाद बालक अधिक भारी हो जाते हैं। यह वृद्धि अस्थियों और माँसपेशियों के विकास के कारण होती है।
- ✓ **शारीरिक अनुपात**: किशोरावस्था में सभी शारीरिक अंग समुचित अनुपात में आ जाते हैं और शरीर प्रौढ़ आकृति ग्रहण कर लेता है।

- ✓ **त्वचा और बाल**: इस अवस्था में बालिकाओं की त्वचा में निखार आता है, जबकि बालकों के चेहरे पर दाढ़ी-मूँछ आने से चेहरे की कोमलता कम हो जाती है। आवाज में भी परिवर्तन होता है — लड़कों की आवाज भारी हो जाती है और लड़कियों की आवाज कोमल बनी रहती है।
- ✓ **दाँतों का विकास**: सामान्यतः 13 वर्ष की आयु तक लगभग 28 स्थायी दाँत निकल आते हैं, शेष दाँत किशोरावस्था के दौरान निकलते हैं।
- ✓ **माँसपेशियों का विकास**: 15 वर्ष की आयु तक माँसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का लगभग 33% हो जाता है और उसके बाद प्रतिवर्ष लगभग 11% की वृद्धि होती है। यह विकास शरीर को सुडौलता प्रदान करता है।
- ✓ **विभिन्न अंगों का विकास**: इस काल में हृदय, फेफड़े, ज्ञानेन्द्रियाँ, हड्डियाँ और अन्य अंग पूर्णतः विकसित हो जाते हैं। जन्म के समय शरीर में 270 हड्डियाँ होती हैं जो किशोरावस्था में 350 तक बढ़ती हैं और प्रौढ़ावस्था में संयोग के कारण पुनः 206 हो जाती हैं।
- ✓ **यौन सम्बन्धी परिवर्तन**:
  - **मुख्य परिवर्तन (Primary Changes)** – प्रजनन अंगों का परिपक्व होना जैसे– वृषण, डिम्बग्रंथि, गर्भाशय आदि।
  - **गौण परिवर्तन (Secondary Changes)** – जैसे– लड़कों में दाढ़ी-मूँछ, भारी आवाज, शुक्र स्राव तथा लड़कियों में स्तन विकास, मासिक धर्म आदि।

मानसिक विकास

मानसिक विकास का केन्द्र बिन्दु **बुद्धि** होती है। बालक की मानसिक सजगता, चिन्तन, निर्णय क्षमता, कल्पना, स्मरण, तर्क और अभिव्यक्ति इसी पर निर्भर करती है। एक सामान्य बुद्धि वाला बालक मंद बुद्धि बालक की तुलना में वातावरण के साथ अधिक सहजता से समायोजन कर लेता है।

हरलॉक के अनुसार –"Mentally a mature individual is one whose intelligence has reached its maximum growth." अर्थात् मानसिक रूप से परिपक्व व्यक्ति वह होता है जिसकी बुद्धि अपनी उच्चतम सीमा तक पहुँच चुकी होती है।

जेम्स ड्रेवर (1984) के अनुसार –"व्यक्ति के जन्म से लेकर परिपक्वावस्था तक की मानसिक क्षमताओं एवं मानसिक कार्यों के उत्तरोत्तर प्रकटन और संगठन की प्रक्रिया को मानसिक विकास कहते हैं।"

मानसिक विकास की विशेषताएँ

- ➢ मानसिक विकास आयु के साथ क्रमिक रूप से बढ़ता है।
- ➢ इससे बालक की बुद्धि और रुचियों में विस्तार होता है।
- ➢ नवीन विचारों, कल्पनाओं और चिन्तन की क्षमता का विकास होता है।
- ➢ बालक समय का ज्ञान प्राप्त करता है और उसे सही तरह से समझने लगता है।
- ➢ हावभाव और क्रियाओं के माध्यम से मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति करता है।
- ➢ योजना बनाने की योग्यता का विकास होता है।
- ➢ बौद्धिक विकास एक क्रमबद्ध प्रक्रिया होती है।
- ➢ बालक गत अनुभवों से सीखने लगता है।
- ➢ निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास (जन्म से 2 वर्ष तक) : शिशु जन्म के समय निरीह अवस्था में होता है। वह केवल रोना, साँस लेना, और सर्दी में कांपना जैसी प्रतिवर्त क्रियाएँ करता है। तीव्र ध्वनियों पर चौंकना और तीव्र रोशनी की ओर ध्यान देना प्रारंभ करता है।

जन्म से दो सप्ताह तक : जन्म के समय शिशु निरीह अवस्था में होता है, वह केवल अपनी शारीरिक दशाओं के अनुसार प्रतिवर्त क्रियायें, जैसे-रोना, सांस लेना, अधिक सर्दी लगने पर कांपना, आदि प्रदर्शित करता है। कभी-कभी तीव्र ध्वनियों को सुनकर चौंक जाता है। जन्म के दूसरे सप्ताह में वह तीव्र रोशनी की ओर भी ध्यान देने लगता है।

तीसरे सप्ताह से द्वितीय वर्ष तक:

- शिशु माँ को पहचानने लगता है और माँ की गोद में जाने पर शांत हो जाता है।
- प्रथम माह में वह सुख-दुख का अनुभव करता है और अकेले छोड़ देने पर रोता है।
- द्वितीय माह में वस्तुओं की ओर ध्यान देता है और माँ को देखकर मुस्कराता है।
- तृतीय माह में वस्तुओं को पकड़ता है और उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया देता है।
- चतुर्थ माह में क्रोध और स्नेह में अंतर समझता है, वस्तुएँ हटाने पर उन्हें खींचने का प्रयास करता है।
- पाँचवें माह में माँ को पहचानता है, उसके अलग होने पर बेचैनी दर्शाता है।
- छठे माह में अनुकरण की क्षमता आती है, दूध न मिलने पर क्रोधित होता है, मिलने पर मुस्कराता है।
- सातवें माह में पसंद-नापसंद का भाव विकसित होता है, स्वाद, ताप, प्रकाश आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।
- आठवें माह में खिलौने को लेकर अधिकार जताता है, संकेतों को समझता है।
- नवें माह में समान आयु के बच्चों के साथ खेलता है।
- दसवें माह में सहयोग और विरोध की प्रवृत्तियाँ विकसित होती हैं।
- ग्यारहवें और बारहवें माह में एकाक्षरी शब्दों का प्रयोग होता है, निरीक्षण की प्रवृत्ति बढ़ती है।

प्रथम और द्वितीय वर्ष:

- बालक भाषा के माध्यम से विचार प्रकट करने लगता है।
- एक से दो शब्दों वाले वाक्य बोलता है।
- समूह में रहना पसंद करता है, सामाजिक क्रियाओं का अनुकरण करता है।
- शब्द भंडार, स्मृति, कल्पना और चिन्तन क्षमता विकसित होती है।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास (3–12 वर्ष तक) :

तीसरा वर्ष:

- जिज्ञासा बढ़ती है, बालक प्रश्न पूछता है।
- संकेतों से फल, शरीर के अंग पहचानता है।
- दैनिक वस्तुओं को पहचानता और उपयोग करता है।

चौथा वर्ष:

- अंकों की गिनती जानता है, पैसों की समझ आती है।
- आकारों का अंतर समझता है, लिखना प्रारंभ करता है।

पाँचवाँ वर्ष:

- तुलनात्मक ज्ञान आता है, नाम, पता, परिवार की जानकारी होती है।
- जटिल वाक्य बनाने लगता है, गणितीय ज्ञान विकसित होता है।

छठा वर्ष:

- भाषा और प्रत्ययात्मक ज्ञान में वृद्धि होती है।
- चित्रों की पहचान करता है, ध्यान और अनुकरण क्षमता बढ़ती है।

सातवाँ वर्ष:

- तर्क और विचार की स्पष्टता आती है।
- रंग, स्वाद, गंध आदि का ज्ञान परिपक्व होता है।

आठवाँ वर्ष:

- भाषा प्रवाहपूर्ण होती है, स्मरण क्षमता तीव्र होती है।
- समूह में रहने की प्रवृत्ति और सामाजिक सहभागिता बढ़ती है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

नवाँ वर्ष:

- बालक समय, तारीख, मूल्य, दूरी आदि की सटीक जानकारी रखता है।
- पढ़ाई और विद्यालयी गतिविधियों में रुचि बढ़ती है।

दसवाँ वर्ष:

- वाक्यशक्ति, निरीक्षण, तर्क और स्मृति अत्यधिक विकसित होते हैं।
- 20-25 शब्दों के वाक्य बनाता है, कहानियाँ, कविताएँ याद रखता है।

ग्यारहवाँ वर्ष:

- वस्तुओं की समानता–भिन्नता समझता है।
- गणितीय और तार्किक सोच तीव्र हो जाती है।

बारहवाँ वर्ष:

- अनुभव आधारित समाधान देना सीखता है।
- जिज्ञासा, शब्द भंडार, चिन्तन, ध्यान और तर्कशक्ति अत्यधिक विकसित होती है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास (13–21 वर्ष तक) : इस अवस्था में मानसिक विकास तीव्रतम होता है। **वुडवर्थ** के अनुसार, "मानसिक विकास 15–20 वर्ष की आयु में अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँचता है।"

- **रुचियों का विकास:** किशोरों में बहुमुखी रुचियाँ विकसित होती हैं। बालिकाएँ नृत्य, संगीत, कला में रुचि लेती हैं; बालक खेल, प्रतिस्पर्धा व तकनीकी कार्यों में।
- **सीखने की क्षमता का विकास:**रुचियों के आधार पर किशोर विविध शैक्षणिक और कौशल संबंधी कार्यों को सीखने में रुचि लेने लगते हैं।
- **मानसिक योग्यताओं का विकास:**सोचने, तर्क करने, निर्णय लेने, समस्या समाधान जैसे गुण विकसित होते हैं।
- **बुद्धि का उच्चतम विकास:** इस अवस्था में बुद्धि अपने शिखर पर पहुँचती है, जिससे बालकों में निम्नलिखित गुण का परिपक्व रूप विकसित हो जाता है।
  - ✓ तर्क शक्ति
  - ✓ स्मरण शक्ति
  - ✓ कल्पना शक्ति
  - ✓ चिन्तन
  - ✓ भाषा का विकास
  - ✓ एकाग्रता की क्षमता

संवेगात्मक विकास

संवेगात्मक विकास मानव जीवन के समग्र विकास तथा सन्तुलित व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है। व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक तथा व्यवहारिक स्तर, उसके संवेगात्मक संतुलन पर निर्भर करता है। जब व्यक्ति भय, क्रोध, प्रेम, घृणा, दया, ईर्ष्या आदि जैसे संवेगों को उचित समय, उचित व्यक्ति और उचित माध्यम से प्रकट करना सीख जाता है, तभी उसे संवेगात्मक रूप से परिपक्व माना जाता है।

संवेगात्मक विकास का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि यदि किसी व्यक्ति के संवेग संतुलित नहीं हैं, तो उसका व्यक्तित्व विघटन की ओर अग्रसर हो सकता है। संवेग सृजनात्मक और विनाशात्मक दोनों हो सकते हैं। 'प्रेम' जहाँ रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करता है, वहीं 'ईर्ष्या', 'घृणा' एवं 'अवसाद' व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाते हैं।

वुडवर्थ (Woodworth) के अनुसार, संवेग व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक ऊर्जा के सक्रिय हो जाने की स्थिति है।

मैकडूगल (McDougall) के अनुसार, संवेग वह अनुभव है जो किसी न किसी मूल प्रवृत्ति से सम्बद्ध होता है।

संवेगात्मक विकास की विशेषताएँ :

- संवेगात्मक विकास विभिन्न अवस्थाओं – शैशव, बाल्य, किशोरावस्था – में क्रमिक रूप से होता है।
- जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है, उसके संवेग अधिक जटिल एवं परिपक्व होते जाते हैं।
- संवेगों का उचित अनुभव और अभिव्यक्ति संवेगात्मक परिपक्वता लाती है।
- संवेगात्मक विकास संवेगों के प्रशिक्षण पर आधारित होता है – जैसे उन्हें नियंत्रित करना, उचित ढंग से व्यक्त करना, एक संवेग को दूसरे में रूपांतरित करना आदि।
- यह विकास बालक के व्यवहार, उसकी सामाजिक सहभागिता और आत्म-संयम को प्रभावित करता है।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास (Infancy: 0–2 वर्ष) : शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास की गति धीमी होती है तथा प्रारंभ में संवेग अस्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं। इस अवस्था में संवेग अधिकतर प्रतिवर्त क्रियाओं के रूप में व्यक्त होते हैं।

- इस अवस्था में बालक की संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ तीव्र लेकिन क्षणिक होती हैं। वह कभी रोता है, कभी हँसता है और कभी-कभी दोनों का मिश्रित प्रकटीकरण करता है।
- प्रमुख संवेग – भय, क्रोध और प्रेम – का विकास इस अवस्था में प्रारंभ होता है।
- शिशु जब दूध नहीं मिलता तो क्रोध करता है, जब माँ आती है तो मुस्कराता है – यही प्रारंभिक संवेगात्मक प्रतिक्रिया होती है।
- जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, शिशु की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में तीव्रता और स्पष्टता आने लगती है।
- वातावरण की भूमिका भी शैशवावस्था के अंतिम चरणों में संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने लगती है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Childhood: 3–12 वर्ष) : इस अवस्था में संवेग अधिक स्थायी एवं सुसंगठित होते हैं। बालक सामाजिक नियमों और अपेक्षाओं के अनुरूप अपने संवेगों को नियंत्रित करना और व्यक्त करना सीखने लगता है।

- इस काल में बालक प्रेम, ईर्ष्या, घृणा, प्रतिस्पर्धा जैसे संवेगों को पहचानने और प्रकट करने लगता है।
- वह अपने व्यवहार को माता-पिता और शिक्षकों की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है।
- इस अवस्था में बालक कभी-कभी झूठ बोलकर अपने को उपेक्षा से बचाने की कोशिश करता है – यह भी संवेगात्मक विकास का भाग है।
- अंततः वह अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीखता है, जिससे उसका सामाजिक समायोजन बेहतर होता है।
- संवेग अब तात्कालिक प्रतिक्रिया न होकर अनुभवों और परिस्थितियों के अनुरूप परिपक्व होकर प्रकट होते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) : किशोरावस्था को संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था कहा जाता है। इस समय शरीर में हार्मोनल परिवर्तन तीव्र होते हैं, जो मानसिक एवं संवेगात्मक उतार-चढ़ाव को जन्म देते हैं।

- किशोर/किशोरी में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति जैसे संवेग अधिक स्थायी और तीव्र रूप में प्रकट होते हैं।
- वे इन संवेगों पर पूर्णतः नियंत्रण नहीं रख पाते, जिससे भावनात्मक अस्थिरता देखी जाती है।
- शारीरिक शक्ति की स्थिति भी संवेगों को प्रभावित करती है – सबल किशोर अधिक स्थिर रहते हैं जबकि कमजोर किशोर अधिक विचलित।
- किशोर अपने रूप, कद-काठी, पढ़ाई, सम्मान, सामाजिक स्थिति, प्रेम संबंधों आदि को लेकर अत्यधिक संवेदनशील रहते हैं।

- ➢ उन्हें यह अनुभव होता है कि वे न तो पूर्णतः बालक हैं, न ही पूर्ण वयस्क, जिससे उनकी संवेगात्मक पहचान संकट में आ जाती है।
- ➢ इस असमंजस की स्थिति में यदि उन्हें समुचित मार्गदर्शन नहीं मिलता, तो वे घर से भागने, आत्महत्या जैसे चरम विकल्पों की ओर भी जा सकते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक:

- ➢ काम प्रवृत्ति की तीव्रता
- ➢ सामाजिक अपेक्षाएँ
- ➢ आत्म-सम्मान की आवश्यकता
- ➢ अस्वीकृति या उपेक्षा का भय
- ➢ अनुकरण और प्रतिस्पर्धा की तीव्र प्रवृत्ति

भाषा विकास

भाषा वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, आवश्यकताओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है। यह मानव को अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती है, क्योंकि भाषा ही उसकी बुद्धि, संस्कृति और सामाजिकता का आधार है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, और विचारों के आदान-प्रदान हेतु उसे निरन्तर भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा न केवल संप्रेषण का साधन है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के विकास के कारण ही बालक समाज में अपने स्थान की स्थापना करता है, विचारों को शुद्धता से प्रकट करता है, और सीखने, पढ़ने, लिखने जैसी क्रियाओं में भाग लेता है।

- ➢ **शैशवावस्था में भाषा विकास (Infancy: 0–2 वर्ष) :**
  - ✓ **भाषा का प्रारंभिक स्वरूप** शिशु के प्रथम क्रन्दन (रोने) से माना जाता है।
  - ✓ पहले चार माह में शिशु अधिकतर स्वर ध्वनियाँ करता है।
  - ✓ लगभग 10 माह की अवस्था तक वह किसी एक शब्द की पुनरावृत्ति करता है, जैसे – "मा-मा", "पा-पा"।
  - ✓ डेढ़ वर्ष तक उसकी भाषा अस्पष्ट होती है – जिसे सामान्यतः केवल माता-पिता समझ सकते हैं।
  - ✓ एक से डेढ़ वर्ष में वह एक शब्दीय वाक्य बोलने लगता है – जैसे दूध के लिए "बू-बू"।
- ➢ **बाल्यावस्था में भाषा विकास (Childhood: 2–12 वर्ष)**
  - ✓ इस अवस्था में स्वरयंत्र और स्नायु-तंत्र की परिपक्वता के साथ भाषा में तीव्र विकास होता है।
  - ✓ बच्चा शब्दों को जोड़कर छोटे वाक्य बनाता है – जैसे “पापा गए”, “मैंने दूध पिया”।
  - ✓ बालिकाओं का भाषा विकास बालकों की तुलना में तेज़ और स्पष्ट होता है।
  - ✓ इस समय भाषा विकास पर परिवार, विद्यालय, सहपाठी, और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का सीधा प्रभाव होता है।
  - ✓ 5–6 वर्ष की अवस्था तक बच्चा 1500 से 2500 शब्दों का भण्डार अर्जित कर लेता है।
- ➢ **किशोरावस्था में भाषा विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) :**
  - ✓ किशोरावस्था में भाषा में **बौद्धिकता, भावनात्मक गहराई और सौंदर्य** देखने को मिलता है।
  - ✓ शब्द चयन में परिपक्वता, वाक्य रचना में शुद्धता और विचारों की स्पष्टता आती है।
  - ✓ कल्पना शक्ति के प्रभाव से कविता, कहानी, नाटक आदि लेखन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

- ✓ विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण के कारण भाषा में माधुर्य और भावप्रवणता प्रकट होती है।
- ✓ भाषा सामाजिक समायोजन में सहायक बनती है, जिससे किशोर समाज में अपनी पहचान बनाता है।

भाषा विकास के चरण (Steps of Language Development)

- ➢ **बोलने की तैयारी (0–1.5 वर्ष)**
  - ✓ **क्रन्दन (Crying):**
    - जन्म के साथ प्रारंभ; प्रारंभिक रोना उद्देश्यहीन होता है।
    - 1 माह के भीतर रोना भूख, पीड़ा, असहजता जैसी आवश्यकताओं से जुड़ जाता है।
    - यह भाषा का प्रारंभिक रूप है, परन्तु अधिक क्रन्दन हानिकारक भी हो सकता है।
  - ✓ **बलबलाना (Babbling):**
    - 2 माह की अवस्था से अस्पष्ट स्वर ध्वनियों की पुनरावृत्ति शुरू होती है – जैसे "पा-पा", "बा-बा"।
    - यह अनुकरण आधारित होता है और स्वरयंत्र को अभ्यास मिलता है।
    - इस क्रिया से ही वास्तविक शब्दों का विकास होता है।
  - ✓ **हावभाव (Gestures):**
    - बालक मूक भाषा द्वारा अपनी इच्छाएँ प्रकट करता है – जैसे उँगली से इशारा करना, हाथ फैलाना।
    - भाषा के पूरक रूप में कार्य करते हैं; जैसे-जैसे भाषा स्पष्ट होती है, हावभाव घटते जाते हैं।
- ➢ **आकलन शक्ति का विकास (Comprehension)**
  - ✓ बच्चे पहले समझना सीखते हैं, बोलना बाद में।
  - ✓ 4 माह का शिशु माँ की आवाज़ पहचानकर मुस्कराता है।
  - ✓ 1 वर्ष में वह सरल निर्देश समझने लगता है – जैसे "दें", "आओ"।
  - ✓ बुद्धि और आकलन शक्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
- ➢ **शब्द प्रयोग (Vocabulary)**
  - ✓ **1 वर्ष:** ~10 शब्द
  - ✓ **2 वर्ष:** ~272 शब्द
  - ✓ **3 वर्ष:** ~900 शब्द
  - ✓ **4 वर्ष:** ~1500 शब्द
  - ✓ **5–6 वर्ष:** ~2500 शब्द
  - ✓ **प्रारंभिक शब्द:** संज्ञा और क्रिया (जैसे – "मामा", "आओ", "लो")
  - ✓ **विशेषण, सर्वनाम:** 1.5 से 3 वर्ष के बीच सीखना शुरू करता है।
  - ✓ **विशिष्ट शब्दावली** (Etiquette, Colours, Time, Number, Money, Slangs) 4–6 वर्ष में विकसित होती है।
  - ✓ बालिकाओं का शब्द भण्डार प्रायः बालकों से अधिक होता है।
- ➢ **वाक्य निर्माण (Sentence Formation)**
  - ✓ **1.5–2 वर्ष:** एक शब्दीय वाक्य – "पापा", "दे दो"
  - ✓ **3–4 वर्ष:** तीन से पाँच शब्दों वाले वाक्य – "मुझे भूख लगी है"
  - ✓ **5–6 वर्ष:** जटिल वाक्य और संयुक्त वाक्य – "पापा ऑफिस गए और मम्मी बाजार"
  - ✓ पहले साधारण वाक्य, फिर मिश्रित और संयुक्त वाक्य बनाना आता है।

Unleash the topper in you

- **शुद्ध उच्चारण (Correct Pronunciation)**
  - ✓ 3 वर्ष तक कई व्याकरणिक त्रुटियाँ पाई जाती हैं – जैसे लिंग, काल, सर्वनाम में भ्रम।
  - ✓ कुछ बच्चे 'श' को 'स', 'त्र' को 'त' उच्चारित करते हैं।
  - ✓ 6–7 वर्ष की अवस्था में स्वरयंत्र परिपक्व हो जाता है और बालक अनुकरण द्वारा शुद्ध उच्चारण सीखता है।
  - ✓ इस अवस्था तक सही शब्दों का अभ्यास कराया जाए तो स्थायी भाषा शुद्धि संभव होती है।

संज्ञानात्मक विकास

संज्ञानात्मक विकास से आशय उन सभी मानसिक प्रक्रियाओं के क्रमिक विकास से है, जो किसी बालक को सोचने, समझने, समस्या हल करने, स्मरण करने और भाषा के माध्यम से विचार अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाती हैं। यह विकास बालक के अनुभव, अधिगम तथा वातावरण से प्रभावित होता है।

प्रारंभिक अवस्था में शिशु सजीव–निर्जीव की पहचान, आवाजों पर प्रतिक्रिया या चेहरों को पहचानने जैसे सामान्य कार्य करता है। बाल्यावस्था में सूचनाओं के प्रयोग, स्मृति विस्तार, और तार्किक सोच का विकास तीव्र होता है। किशोरावस्था में यह विकास अधिक परिपक्वता प्राप्त करता है – जहां बालक आलोचनात्मक चिन्तन, गहन विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता अर्जित करता है।

जीन पियाजे (Jean Piaget) का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत विशेष रूप से शिक्षा एवं बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। पियाजे ने बताया कि बालकों का बौद्धिक विकास एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जो अनुभव और अधिगम के आधार पर होता है।

शैशवावस्था में संज्ञानात्मक विकास (Infancy: 0–2 वर्ष) :

- इस अवस्था में बालक अपने ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से वातावरण को जानने का प्रयास करता है।
- वह धीरे-धीरे चेहरों को पहचानने, आवाज पर प्रतिक्रिया देने, और खिलौनों से परिचित होने लगता है।
- समस्या समाधान का प्रारंभिक रूप – जैसे किसी वस्तु को खींचना, रोने से ध्यान आकर्षित करना – देखा जाता है।
- इस अवस्था में संज्ञानात्मक विकास को निम्न कारक प्रभावित करते हैं:
  - ✓ पालन-पोषण की पद्धति
  - ✓ पर्यावरणीय उत्तेजनाएँ
  - ✓ सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिवेश

बाल्यावस्था में संज्ञानात्मक विकास (Childhood: 3–12 वर्ष) :

बाल्यावस्था संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील एवं तीव्रगामी होती है। इस दौरान बालक की स्मृति, कल्पना, तार्किकता, अवबोधन और भाषा तीव्रता से विकसित होते हैं।

छठवाँ वर्ष:

- बालक भाषा का कुशल प्रयोग करता है।
- स्मृति और कल्पना शक्ति में तीव्र विकास होता है।
- सरल प्रश्नों के उत्तर देता है।

सातवाँ वर्ष:

- घटनाओं का वर्णन करता है।
- वस्तुओं में समानता-अंतर पहचानता है।
- निर्देशों को सही ढंग से समझता है।

आठवाँ वर्ष:

- सामान्य समस्याएँ हल करने की क्षमता आती है।
- कविता, कहानी याद करता है।

नवाँ वर्ष:

- समय, दिन, तारीख, वर्ष, मुद्रा आदि का बोध हो जाता है।
- गणना करने में सक्षम हो जाता है।

दसवाँ वर्ष:

- स्पष्ट बोलने में दक्षता आती है।
- निरीक्षण और तर्क में निपुणता विकसित होती है।

ग्यारहवाँ वर्ष:

- गद्यांश का सार निकाल सकता है।
- उल्टी गिनती, तुलना और कारण-विश्लेषण करने में सक्षम होता है।

बारहवाँ वर्ष:

- तर्क, विश्लेषण और समस्या समाधान की योग्यता विकसित होती है।
- विवेकशीलता आती है – दूसरों को सलाह देने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

किशोरावस्था में संज्ञानात्मक विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) :

किशोरावस्था वह समय है जब संज्ञानात्मक विकास अपनी उच्चतम सीमा की ओर अग्रसर होता है। बुद्धि, स्मृति, कल्पना, विचार, और विश्लेषणात्मक क्षमता इस अवस्था में चरम पर पहुँचती है।

बुद्धि का उच्चतम विकास:

- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बुद्धि का पूर्ण विकास 16–20 वर्ष की आयु तक हो जाता है।
- यह वह अवस्था होती है जब बालक किसी भी जटिल विषय पर स्वतः विचार कर सकता है।

उच्चतर मानसिक शक्तियाँ विकसित होती हैं:

- सामान्यीकरण (Generalization)
- परोक्ष चिन्तन (Abstract Thinking)
- दीर्घकालीन स्मृति (Long-Term Memory)
- भविष्य दृष्टि (Foresight)
- समाधान क्षमता (Problem-Solving Ability)

रुचियों में विविधता:

- किशोरों की रुचियाँ तेज़ी से बदलती हैं – जैसे कुछ में खेल, संगीत, नृत्य, फिल्म, साहित्य, अध्ययन, फैशन आदि के प्रति झुकाव देखा जाता है।
- बालिकाएँ साहित्यिक एवं रचनात्मक क्षेत्रों में आगे होती हैं जबकि बालक तकनीकी एवं प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्रों में।

भाषा विकास:

- इस अवस्था में भाषा में बौद्धिकता, तर्क और व्याकरणिक परिपक्वता आ जाती है।
- किशोर यह समझने लगते हैं कि किससे कैसी भाषा में बात करनी है – औपचारिक व अनौपचारिक शैली में अंतर समझते हैं।

सामाजिक विकास

सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के नियमों, परम्पराओं, मान्यताओं और प्रतिमानों को सीखता है तथा उनके अनुसार व्यवहार करना प्रारंभ करता है। इसमें बालक समाज के साथ समायोजन स्थापित करता है, सामाजिक गुणों को अपनाता है और सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व, सहभागिता आदि की भावनाएँ विकसित करता है।

मनुष्य जन्म से सामाजिक नहीं होता, वह सामाजिक बनता है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से संभव होता है जो बाल्यकाल से ही शुरू होकर जीवनपर्यन्त चलती रहती है। सामाजिक विकास के बिना व्यक्ति सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित नहीं हो सकता।

I.L. Child के अनुसार: सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने समूह के मानकों के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है।

E.B. Hurlock के अनुसार: सामाजिक विकास से तात्पर्य सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करने की योग्यता को प्राप्त करने से है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास (Infancy: 0–3 वर्ष) :

- ➢ जन्म के समय शिशु सामाजिक नहीं होता, वह केवल जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रतिक्रिया करता है।
- ➢ तीसरे वर्ष तक बालक आत्मकेन्द्रित होता है – अर्थात् केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति पर केंद्रित रहता है।
- ➢ चतुर्थ वर्ष के समीप आते-आते बालक बाह्य परिवेश की ओर उन्मुख होने लगता है।
- ➢ शिशु धीरे-धीरे मित्र बनाना, विचार साझा करना, अन्य बच्चों में समायोजन करना सीख जाता है।
- ➢ सामाजिक प्रक्रिया का आरम्भ माँ से होता है और फिर वह दायरा विस्तृत होता जाता है।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Childhood: 4–12 वर्ष) :

- ➢ बालक का संसार अब परिवार से बाहर निकलकर संगी-साथियों, विद्यालय और समूह तक विस्तृत हो जाता है।
- ➢ विशेषताएँ :
  - ✓ **सामाजिक जागरूकता और चेतना** विकसित होती है।
  - ✓ बालक-बालिकाएँ खेल समूह बनाते हैं और नियमों का पालन करते हैं।
  - ✓ मित्रता का विकास होता है – विशेषतः कक्षा के सहपाठियों से।
  - ✓ बच्चे आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास करते हैं – निर्णय लेने, कार्य करने और व्यवहार के स्तर पर।
  - ✓ आत्मसम्मान की भावना अधिक विकसित होती है।
- ➢ इस अवस्था में सामाजिकता के बीज अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व, समूह भावना आदि के रूप में अंकुरित होने लगते हैं।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) :

किशोरावस्था में सामाजिक विकास गहराई और जटिलता प्राप्त करता है। इस अवस्था में स्वयं की पहचान की खोज और समाज में स्थान की आकांक्षा प्रमुख होती है।

- ➢ **आत्मप्रेम की भावना** तीव्र होती है। किशोर अपनी वेशभूषा, शारीरिक आकर्षण एवं व्यक्तित्व पर विशेष ध्यान देते हैं।
- ➢ **विषमलिंगी आकर्षण** प्रारंभ होता है। किशोर–किशोरी एक-दूसरे से संवाद और संपर्क की इच्छा रखते हैं।
- ➢ **समूह की सक्रियता** – किशोर अपने समूह के सक्रिय व प्रतिष्ठित सदस्य बनने की इच्छा रखते हैं और उसके लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते हैं।
- ➢ **आत्मसम्मान की तीव्रता** – वे स्वयं को “बच्चा” मानने से इनकार करते हैं और “वयस्क” की मान्यता चाहते हैं।

  संवेगों की तीव्रता – वे अपनी इच्छाओं को समाज के मानकों के विरुद्ध भी प्रकट करना चाहते हैं, जिससे समायोजन में अस्थिरता आ जाती है।

नैतिक विकास

नैतिकता वह गुण है जो व्यक्ति को समाज के मानकों, मूल्यों, आदर्शों और व्यवहार संहिताओं के अनुरूप कार्य करना सिखाती है। नैतिक विकास से आशय उस क्रमिक प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से बालक अच्छाई-बुराई, उचित-अनुचित, सत्य-असत्य और उत्तरदायित्व जैसे नैतिक विचारों को समझता है तथा अपने व्यवहार में उन्हें अपनाता है।

बच्चा नैतिक विचारों का जन्मजात ज्ञाता नहीं होता, वह सामाजिक अन्तःक्रिया और अनुभवों के माध्यम से नैतिकता अर्जित करता है। पुरस्कार–दण्ड, अनुशासन, समूह सहभागिता और मूल्य शिक्षा इस विकास की प्रमुख प्रेरक शक्तियाँ हैं।

> **जोन्स (1954)** के अनुसार: नैतिकता का सम्बन्ध किसी विशेष समय या स्थान के आदर्शों के अनुरूपता के प्रदर्शन से है।
>
> **हरलॉक (1978, 1984)** के अनुसार: नैतिक आचरण का अर्थ है सामाजिक समूह की नैतिक संहिता के अनुसार आचरण करना। 'Moral' शब्द लैटिन भाषा के 'Mores' से बना है, जिसका अर्थ है आचरण, रीतियाँ या लोक परम्पराएँ।

बचपनावस्था में नैतिकता (Babyhood: 0–2 वर्ष):

- इस अवस्था में बच्चे गैर-नैतिक होते हैं, यानी उनमें नैतिकता अथवा अनैतिकता की कोई परिभाषा नहीं होती।
- उनका अच्छा या बुरा व्यवहार इस बात पर निर्भर करता है कि कोई कार्य उनके लिए सुखद है या कष्टदायक।
- वे दूसरों की भावनाओं या अधिकारों की परवाह नहीं करते।
- निर्देशों की अवहेलना कर सकते हैं क्योंकि उन्हें परिणामों का बोध नहीं होता।

पूर्व-बाल्यावस्था में नैतिकता (Early Childhood: 2–6 वर्ष) :

- इस अवस्था में नैतिकता की नींव रखी जाती है।
- बच्चा सही–गलत का अंतर पुरस्कार और दण्ड के माध्यम से सीखता है।
- वह अच्छा व्यवहार दिखाने पर प्रशंसा प्राप्त करता है और अनुचित व्यवहार पर उसे दण्ड मिलता है।
- पाँचवें वर्ष तक आज्ञाकारिता की भावना विकसित हो जानी चाहिए।
- इस उम्र तक वह गलतियों पर पछताना भी सीख लेता है।

उत्तर-बाल्यावस्था में नैतिकता (Late Childhood: 6–12 वर्ष) :

- इस अवधि में बालक विद्यालय, खेलकूद, समूहों और क्लबों के संपर्क में आ जाता है।
- समूह नियम और सामूहिक अनुशासन बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करते हैं।
- बालक विभिन्न आदर्शों को समझने लगता है, जैसे–
  - ✓ झूठ बोलना गलत है,
  - ✓ मित्र को धोखा देना अनुचित है,
  - ✓ निडरता और ईमानदारी सराहनीय हैं।
- न्याय और सम्मान की भावना विकसित होती है, परंतु वह अभी भी अपने कार्यों के लिए स्वयं को पूर्णतः उत्तरदायी नहीं मानता।
- नैतिकता इस अवस्था में अनुरूपता आधारित होती है, आत्मनियंत्रण आधारित नहीं।

किशोरावस्था में नैतिकता (Adolescence: 13–21 वर्ष) :

- किशोरावस्था में नैतिक परिपक्वता का विकास होता है।
- वह समाज में अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व को समझने लगता है।

- यदि सही मार्गदर्शन न मिले तो नैतिकता की बजाय अनैतिक व्यवहार विकसित हो सकता है।
- इस अवस्था में किशोर उच्च मूल्यों जैसे-
  - ✓ कर्तव्य,
  - ✓ आत्मसंयम,
  - ✓ उत्तरदायित्व,
  - ✓ समाज के प्रति उत्तरदायित्व
  - ✓ सेवा की भावना विकसित करता है।
- लेकिन साथ ही, यदि उसे अस्वीकृति, असफलता या दबाव झेलना पड़े, तो उसमें विद्रोह या अनैतिक प्रवृत्तियाँ भी पनप सकती हैं।

क्रियात्मक विकास

क्रियात्मक विकास से आशय उन **शारीरिक क्रियाओं** और **गत्यात्मक योग्यताओं** से है जिनके माध्यम से बालक अपने **शरीर की माँसपेशियों को नियंत्रित** करना सीखता है। यह विकास जन्म के पश्चात अनियमित और अनिश्चित क्रियाओं को क्रमशः **नियंत्रित, समन्वित और उद्देश्यपूर्ण** बनाता है।

> **हरलॉक (E.B. Hurlock)**: क्रियात्मक विकास उन माँसपेशीय क्रियाओं को नियंत्रित करने की प्रक्रिया है जो जन्म के समय निरर्थक व अनिश्चित होती हैं।
> **क्रो एण्ड क्रो (Crow & Crow)**: क्रियात्मक योग्यताएँ वे विभिन्न शारीरिक गतियाँ हैं जो तंत्रिका और माँसपेशियों के समन्वय से संभव होती हैं।

शैशवावस्था में क्रियात्मक विकास (Infancy) :
शैशवावस्था में क्रियात्मक विकास की **प्रारंभिक अवस्था** गर्भकाल से ही आरंभ हो जाती है। जन्म के पश्चात् शिशु द्वारा की जाने वाली क्रियाएँ **बिना किसी उद्देश्य के होती हैं**, क्योंकि उस समय तक उसका **स्नायु तंत्र पूर्ण रूप से विकसित नहीं** होता है।

शिशु की क्रियाओं के प्रकार:
- **सामान्य क्रियाएँ (General Activities)** – जैसे कि किसी एक अंग को छूने पर पूरा शरीर प्रतिक्रिया करता है। उदाहरणस्वरूप, यदि एक पैर को गुदगुदाया जाए, तो शिशु दोनों पैर झटकता है या करवट लेता है।
- **विशिष्ट क्रियाएँ (Specific Activities)** – यह विशेष उद्दीपनों के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जिनमें दो प्रकार की क्रियाएँ आती हैं:
  - ✓ **सहज क्रियाएँ (Reflexes)** जैसे झपकना, चूसना, पकड़ना
  - ✓ **सामान्यीकृत अनुक्रियाएँ (Generalized Responses)**

सिर व चेहरे के भागों में विकास:
- नेत्रगति की शुरुआत जन्म के 12 घंटे बाद से होती है और 3 माह की आयु में शिशु दृष्टि स्थिर करना सीख जाता है।
- मुस्कराहट, एक सहज क्रिया है जो जन्म के एक सप्ताह के अंदर प्रकट होती है, लेकिन सामाजिक मुस्कराहट तीन से चार माह की अवस्था में विकसित होती है।
- सिर उठाना – प्रारंभ में सिर लुढ़कता है, लेकिन दो माह की अवस्था में शिशु पेट के बल लेटकर सिर उठाने लगता है और छह माह तक वह बिना सहारे के सिर को नियंत्रित कर पाता है।

भुजाओं एवं हाथों में क्रियात्मक विकास:
- **हाथ फैलाना** – शुरू में असंतुलित रूप से होता है, लेकिन धीरे-धीरे सधा हुआ प्रयास बनने लगता है।
- वस्तु छूना – यह क्रिया चार से पाँच माह की आयु से प्रकट होती है।
- वस्तु पकड़ना – सात–आठ माह की आयु में शिशु दोनों हाथों से वस्तुएँ पकड़ सकता है।
- मुट्ठी से पकड़ना – इसी आयु में पकड़ की शक्ति प्रबल होती है।

बाल्यावस्था में क्रियात्मक विकास (3–11 वर्ष) :

बचपन में क्रियात्मक विकास का स्तर और अधिक व्यवस्थित हो जाता है। शिशु अवस्था में जिन क्रियात्मक योग्यताओं की आधारशिला पड़ी थी, बाल्यावस्था में उन्हीं के अनुरूप **कौशलों का परिष्कृत विकास** होता है।

नियंत्रण की परिपक्वता:

बालक इस अवस्था में अपने शरीर के विभिन्न अंगों जैसे हाथ, पैर, सिर आदि पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है और अब वह जटिल क्रियाएँ जैसे—

- दौड़ना
- कूदना
- चित्र बनाना
- वस्तुएँ बनाना
- संतुलन बनाए रखना आदि करने में सक्षम हो जाता है।

कौशल विकास को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्व:

- **परिपक्वता** (Maturation)
- **अभ्यास** (Practice)
- **सीखने के अवसर** (Learning Opportunities)
- **मांसपेशीय समन्वय** (Neuromuscular Coordination)
- **मानसिक योग्यता** (Mental Ability)
- **परिवार एवं विद्यालय का योगदान**

Toppersnotes
Unleash the topper in you